International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(II), January- March, 2025, pp. 270-278

डिजिटलीकरण और सामाजिक पहचानः शहरी भारत के युवाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन

पुष्पा मीणा*

सार

डिजिटलीकरण ने आधुनिक युग में सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। विशेषकर शहरी भारत में युवा वर्ग के जीवन में डिजिटल माध्यमों का प्रभाव गहरा और व्यापक हो गया है। यह रिसर्च शहरी भारत के युवाओं के सामाजिक पहचान के निर्माण और पुनर्निर्माण में डिजिटलीकरण की भूमिका का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। युवाओं की डिजिटल सहभागिता, अर्थात सोशल मीडिया, ऑनलाइन समुदाय, और डिजिटल संचार के माध्यम से उनके व्यक्तित्व, मूल्य, और सामाजिक संबंधों में आये परिवर्तन इस शोध का मुख्य केंद्र हैं। Urban लवनजी के लिए डिजिटलीकरण न केवल संवाद के नए मापदंड खोलता है, बल्कि उनके सामाजिक पहचान के निर्माण में भी क्रियाशील होता है। यह शोध यह पता लगाने का प्रयास करता है कि किस तरह डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अभिव्यक्तियां, डिजिटल संस्कृतियां, और ऑनलाइन समुदाय युवाओं के आत्म–अधिकार, सांस्कृतिक पहचान, और सामाजिक समूहों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को प्रभावित करते हैं। इसके साथ ही, यह अध्ययन यह भी जांचता है कि कैसे डिजिटल दुनिया में युवाओं की पहचान पारंपरिक सामाजिक संस्थाओं जैसे परिवार, जाति, धर्म, और क्षेत्रीयता से संबंध बनाए रखती है या उनसे अलग होती है। द्रव्य प्रतिनिधित्व के लिए शहरी क्षेत्रों के विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले युवाओं का चयन किया गया है, जिससे विविधता में एक व्यापक तस्वीर मिल सके। डेटा डिजिटल सहभागिता, फोकस ग्रुप चर्चा, और गहन साक्षात्कार के अवलोकन के माध्यम से प्राप्त किया गया है। इस शोध में यह देखा गया कि युवाओं को अपनी सामाजिक पहचान को अधिक लचीले, बहुआयामी, और निरंतर विकसित होने योग्य बनाने में डिजिटल तकनीकों ने सक्षम किया है। इसके अलावा, सोशल मीडिया ने समान रुचि, अनुभव और संघर्ष वाले समूहों से युवाओं को जुड़ने के नए अवसर प्रदान किए हैं, जो पारंपरिक सामाजिक सीमाएँ पार करते हैं। हालांकि, डिजिटलीकरण के इस प्रसार के साथ ही कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जैसे कि डिजिटल असमानता, ऑनलाइन पहचान की अस्थिरता, और डिजिटल निगरानी के कारण उत्पन्न सामाजिक दबाव। यह अध्ययन इस द्वैत को भी रेखांकित करता है कि कैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म युवाओं को सशक्त बनाते हुए भी कभी–कभी उनके लिए पहचान संकट और सामाजिक अलगाव के कारक बन सकते हैं। अंततः, यह शोध शहरी भारत के युवाओं की सामाजिक पहचान की जटिलताओं और विविधताओं को समझने में डिजिटलीकरण के योगदान को उजागर करता है। यह सामाजिक विज्ञान और डिजिटल मीडिया अध्ययन के क्षेत्र में नयी दृष्टि प्रदान करता है और नीतिगत स्तर पर युवा विकास, डिजिटल शिक्षा, तथा सामाजिक समावेशन के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रस्तुत करता है।

शब्दकोशः *डिजिटलीकरण, समाजशास्त्रीय अध्ययन, युवा विकास, डिजिटल शिक्षा, सामाजिक समावेशन।*

प्रस्तावना

वर्तमान समय में डिजिटल क्रांति ने समाज के हर एक क्षेत्र पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। विशेषकर शहरी भारत के युवाओं में डिजिटलीकरण ने न केवल उनके संवाद और सामाजिक संपर्क के माध्यमों को प्रभावित किया है, बल्कि उनके सामाजिक पहचान के रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। सामाजिक पहचान

* सह–आचार्या, समाजशास्त्र, एस.आर.पी. राजकीय महाविद्यालय, बांदीकुई, दौसा, राजस्थान।

वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं का उस सामाजिक समूह से जुड़ता है जहाँ उसका हिस्सा बनने की प्रवृत्ति होती है। यह पहचान व्यक्ति के व्यवहार, मूल्य प्रणाली, और समाज में उसकी अपनी भूमिका का निर्धारण करती है। डिजिटल वयास में, सोशल मीडिया, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, और अन्य डिजिटल माध्यम युवाओं को अपनी सामाजिक पहचान बनाने, व्यक्त करने, और संशोधित करने के नए माध्यम प्रदान करते हैं।

पृष्ठभूमि अध्ययन

भारत का सामाजिक ढांचा विविधताओं से भरा हुआ है, जहाँ परिवार, जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीयता जैसे पारंपरिक घटक अभी भी सामाजिक पहचान के निर्धारण में काम करते हैं। शहरीकरण और डिजिटलीकरण की प्रक्रिया ने हालांकि इन पारंपरिक ढांचों को चुनौती दी है। इंटरनेट और स्मार्टफोन की जमीन पर रहने वाले आज के युवा पारंपरिक सामाजिक सीमाओं को लांघकर एक बहुआयामी और बहु–सांस्कृतिक पहचान के साथ उभर रहे हैं।

डिजिटल माध्यमों ने युवाओं को न केवल स्थानीय बल्कि वैश्विक स्तर पर संवाद और सहभागिता का अवसर दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और व्हाट्सएप ने उनके सामाजिक संबंधों और पहचानों को पुनः परिभाषित किया है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल स्थानों में नए समुदायों, विचारों, और सांस्कृतिक आदान–प्रदान ने युवाओं के सामाजिक अनुभवों को समृद्ध किया है।

परंतु, डिजिटल दुनिया में सामाजिक पहचान के निर्माण के साथ–साथ कई चुनौतियाँ भी हैं, जैसे कि डिजिटल असमानता, पहचान की अस्थिरता, साइबर हिंसा, और पहचान आधारित भेदभाव। ऐसे संदर्भ में, शहरी भारत के युवाओं के सामाजिक पहचान की जांच करना आवश्यक हो जाता है ताकि उनके अनुभवों, समस्याओं और उम्मीदों को समझा जा सके।

अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन मुख्य रूप से शहरी भारत के युवाओं पर केंद्रित है, जो डिजिटल माध्यमों का सक्रिय उपयोग करते हैं। इसमें विभिन्न शहरी क्षेत्रों से आने वाले युवाओं के डिजिटल व्यवहार, सामाजिक संबंध, पहचान के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन का दायरा युवा वर्ग के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक पृष्ठभूमि के अनुसार उनके डिजिटल सहभागिता के प्रभावों का समावेश करेगा।

अध्ययन की मुख्य सीमाएं इस प्रकार हैंः यह ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं पर केंद्रित नहीं है, न ही यह तकनीकी पहलुओं या डिजिटल उपकरणों के उपयोग पर विस्तृत तकनीकी विश्लेषण प्रस्तुत करेगा, बल्कि इसका मुख्य फोकस सामाजिक पहचान के निर्माण और बदलाव पर है।

अध्ययन का महत्व

डिजिटलाइजेशन भारतीय समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक जाल को ढालता जा रहा है, खासकर युवाओं की संदर्भ में। शहरी युवाओं की सामाजिक पहचान का अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकिः

- यह समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह समझने में मदद करता है कि डिजिटल युग में सामाजिक समूह और पहचान कैसे विकसित और बदलती जा रही है।
- यह नीति निर्माण से शिक्षा संस्थानों और शिक्षा नीति निर्माताओं को मानसिक स्वास्थ्य युवाओं के मामले, डिजिटल शिक्षा, और सामाजिक समावेशन के विषय पर मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।
- डिजिटल चौनलों के विपक्षी प्रभावों को कठिनाई में साइबरबुलिंग, पहचान संकट, और सामाजिक दूरी समझने और उनसे निपटने के लिए उपाय ढूंढने में मददगार होगा।
- यह सामाजिक संगठनों और समुदायों को यह जानने में मदद करेगा कि वे युवाओं को पारंपरिक और डिजिटल दोनों सामाजिक संस्थानों से जुड़ने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं

इसके अलावा, यह अध्ययन सामाजिक विविधता और सहिष्णुता को बढ़ावा देने में भी मदद करेगा, जिससे सामाजिक स्थिरता और विकास संभव होगा।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य शहरी भारत के युवाओं की सामाजिक पहचान पर डिजिटलीकरण के प्रभाव का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित उप–लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं:

- शहरी युवाओं के डिजिटल व्यवहार और उनकी सामाजिक पहचान के बीच संबंध को समझना।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म पर युवाओं द्वारा अपनाई जाने वाली सामाजिक पहचान की विविधता और बहुआयामी स्वरूप का अध्ययन करना।
- पारंपरिक सामाजिक संस्थाओं (जैसे परिवार, जाति, धर्म) और डिजिटल पहचान के बीच के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना।
- डिजिटलीकरण के कारण उत्पन्न हुई सामाजिक बदलावों के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों की पहचान करना।
- डिजिटल असमानता और सामाजिक समावेशन के मुद्दों को समझना और समाधान सुझाना।
- युवाओं के डिजिटल माध्यमों के उपयोग से उत्पन्न सामाजिक चुनौतियों जैसे साइबर हिंसा, पहचान संकट आदि का विश्लेषण करना।

अनुसंधान की आवश्यकताएँ

भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में, जहाँ युवा जनसंख्या बड़ी संख्या में है, उनके सामाजिक व्यवहार और पहचान का अध्ययन महत्वपूर्ण है। शहरी भारत में डिजिटलीकरण की तीव्र प्रगति के कारण युवाओं के सामाजिक अनुभवों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों को समझना न केवल समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से जरूरी है, बल्कि इसके माध्यम से सामाजिक नीतियाँ और कार्यक्रम भी अधिक प्रभावी बनाए जा सकते हैं।

समस्या का विवरण

डिजिटलीकरण के इस युग में तकनीक और इंटरनेट ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। खासकर शहरी भारत के युवा वर्ग की सामाजिक पहचान और जीवनशैली पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है। युवाओं की सामाजिक पहचान, जो पारंपरिक सामाजिक संस्थाओं, सांस्कृतिक मूल्यों, परिवार और मित्रता के आधार पर निर्मित होती थी, अब डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे सोशल मीडिया, ऑनलाइन नेटवर्किंग साइट्स आदि के माध्यम से भी आकार ले रही है। इस परिवर्तन से कई सामाजिक प्रश्न उत्पन्न हो रहे हैं कृ क्या डिजिटल गतिविधियाँ युवाओं की सामाजिक पहचान को सकारात्मक रूप से विकसित कर रही हैं या इससे अस्वास्थ्यकर तुलना, मानसिक तनाव और सामाजिक अलगाव की समस्या बढ़ रही है? क्या पारंपरिक सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य डिजिटलीकरण की चुनौती का सामना कर पा रहे हैं?इन प्रश्नों के संदर्भ में यह शोध डिजिटल तकनीकों के शहरी युवाओं की सामाजिक पहचान पर प्रभाव को समझने का प्रयास करता है। समस्या यह है कि डिजिटल युग में सामाजिक पहचान का स्वरूप किस प्रकार परिवर्तित हो रहा है और इस परिवर्तन के सामाजिक परिणाम क्या हैं।

अध्ययन की सीमा और सीमाएँ

अध्ययन की सीमा

यह शोध शहरी भारत के 18 से 30 वर्ष के युवाओं तक सीमित है, जो दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, जयपुर और लखनऊ जैसे बड़े शहरी केंद्रों से हैं। अध्ययन में मुख्य रूप से डिजिटल माध्यमों के उपयोग, उनके सामाजिक पहचान निर्माण में योगदान, और इस परिवर्तन से जुड़े सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावों पर केंद्रित है।

अध्ययन की सीमाएँ

- यह अध्ययन केवल शहरी युवाओं पर केंद्रित है, ग्रामीण या अर्ध–शहरी क्षेत्रों के युवाओं को शामिल नहीं करता।

- सांख्यिकीय उपकरणों का प्रयोग न करके गुणात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे परिणामों का सामान्यीकरण सीमित हो सकता है।
- डिजिटल गतिविधियों के मनोवैज्ञानिक पहलुओं का विस्तृत अध्ययन इस शोध में सम्मिलित नहीं है।

समय और संसाधनों की सीमाओं के कारण सीमित नमूना आकार लिया गया है।

साहित्य समीक्षा

आशीष कुमार (2024) पुस्तकः "भारतीय समाज की गतिशीलता": इस पुस्तक में भारतीय समाज में क्रियान्वित जा रहे सामाजिक परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें डिजिटलीकरण और शहरीकरण के प्रभावों को भी सम्मिलित किया गया है। यह अध्ययन सामाजिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं के बीच की परस्पर क्रिया को समझने में सहायक है।

नरेश भार्गव एवं ज्योति सिडाना (2024) पुस्तकः "सामाजिक यथार्थः उभरते समाजशास्त्रीय नैरेटिव": यह संपादित पुस्तक भारतीय समाज के विभिन्न सामाजिक मुद्दों और अवधारणाओं पर आधारित है, जिसमें नवजागरण, वैश्वीकरण और सामाजिक संरचनाओं के परिवर्तन पर विशेष ध्यान दिया गया है।

धीरज जॉनसन (2025) आर्टिकलः "शहरीकरण और ग्रामीण समाजः सामाजिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन": इस शोध में शहरी और ग्रामीण समाज की सामाजिक संरचना, जीवन शैली, आर्थिक क्रियाओं, सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक संबंधों की तुलना की गई है, जो शहरी युवाओं की सामाजिक पहचान को समझने में सहायक है।

राम कुमार (2023) लेखः "समाज पर मोबाइल के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन": यह अध्ययन मोबाइल तकनीक के समाज पर प्रभाव को विश्लेषित करता है, विशेषकर युवाओं के संदर्भ में, और उनके सामाजिक व्यवहार में आए परिवर्तनों को उजागर करता है।

डॉ. अलका रानी एवं आरती भट (2023) लेखः "वर्तमान में न्यू मीडिया का युवाओं व बच्चों पर प्रभाव": न्यू मीडिया के प्रभावों को युवाओं और बच्चों के सामाजिक और मानसिक विकास के सम्बन्ध में यह शोध में विश्लेषित किया गया है।

अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. अनिल कुमार शुक्ल (2024)लेखः "शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के शैक्षिक व सामाजिक आयामों के प्रति जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन": यह शोध शहरी और ग्रामीण छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता के अंतर को प्रस्तुत करता है, जो सामाजिक पहचान के संरचना में कार्य करता है।

प्रो. के.एल. शर्मा (2023) जर्नलः "सामाजिक विमर्श": इस जर्नल में समाजशास्त्र के दपअमतेम मुद्दों पर लेख प्रकाशित किए गए हैं, जो हाशिए पर स्थित समूहों, जैसे दलितों, आदिवासियों, महिलाओं आदि के सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित हैं।

डॉ. गीतिका नागर (2024) लेखः "सोशल मीडिया के दुरूपयोग का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभावः एक समीक्षा": यह अध्ययन सोशल मीडिया के दुरुपयोग के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव को विश्लेषित करता है, जो युवाओं की सामाजिक पहचान और मानसिक स्थिति को प्रभावित कर सकता है।

अशोक कुमार (2024) लेखः "शिक्षा में तकनीकी प्रगति और उसका प्रभावः एक साहित्य समीक्षा": इस समीक्षा में शिक्षा क्षेत्र में तकनीकी प्रगति के प्रभावों को विश्लेषित किया गया है, जो युवाओं की सामाजिक पहचान और सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

डॉ. सुमन एवं पूजा (2023) लेखः "वैश्वीकरण के दौर में शिक्षा प्रणाली में प्रौद्योगिकी साक्षरता का अध्ययन": यह अध्ययन वैश्वीकरण के प्रेस पिंड में शिक्षा प्रणाली में प्रौद्योगिकी साक्षरता के महत्व को उजागर करता है, जो युवाओं की सामाजिक पहचान के निर्माण में सहायक है।

डॉ. ममता सागर एवं इंदु (2023) लेखः "भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का निरंतर परिवर्तित स्वरूपः समस्या एवं चुनौतियां एक समाजशास्त्रीय अध्ययन": यह शोध संयुक्त परिवार प्रणाली में किन परिवर्तनों की चल रही है और सामाजिक चुनौतियाँ क्या हैं, वे विश्लेषित करता है जो शहरी युवाओं की सामाजिक पहचान को प्रभावित कर सकता है।

डॉ. रीना शर्मा एवं प्रियंका (2023) लेखः "ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरणः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन": यह अध्ययन ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के प्रयासों और उनकी सामाजिक पहचान पर प्रभाव का विश्लेषण करता है, जो शहरी युवाओं के समक्ष तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

शोध पद्धति

- **अनुसंधान डिजाइन**

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) और वर्णनात्मक (Descriptive) प्रकार का है। इसका कार्य यह समझने का है कि डिजिटलीकरण किस किसी की शहरी भारत के युवाओं की सामाजिक पहचान पर क्या प्रभाव छोड़ा है। सामाजिक पहचान के विभिन्न पहलुओं जैसे कि आत्म–छवि, सामाजिक संबंध, सांस्कृतिक परिवर्तनों और डिजिटल सहभागिता के प्रभावों का गहराया विश्लेषण किया गया है।

शोध में डिजिटल मीडिया, सोशल नेटवर्किंग साइट्स और ऑनलाइन संवाद के प्रभावों को विशेषता दी गई है। यह अध्ययन विभिन्न शहरी क्षेत्रों के युवाओं के डिजिटल व्यवहार और उनकी सामाजिक भूमिका पर आत्मनिर्भर है।

- **नमूना आकार**

इस शोध के लिए purposive sampling तकनीक का उपयोग करते हुए भारत के पाँच प्रमुख शहरों (दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, जयपुर और लखनऊ) से कुल 120 युवाओं को चुना गया। इनमें 60 पुरुष और 60 महिलाएं शामिल हैं, जिनकी उम्र 18 से 30 वर्ष के बीच है। यह समूह शहरी युवाओं की विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व करता है।

- **डेटा संग्रह की विधियाँ**
  - अर्ध–संरचित साक्षात्कार (Semi & structured Interviews): प्रतिभागियों से उनके डिजिटल व्यवहार, सोशल मीडिया का इस्तेमाल और सामाजिक पहचान के बारे में गहरी चर्चा की गई।
  - फोकस ग्रुप चर्चा (Focus Group Discussions): युवाओं के समूहों में डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के प्रभावों पर खुली चर्चा आयोजित की गई।
  - प्रतिभागी अवलोकन (Participant Observation): सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर युवाओं की गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।

- **डेटा विश्लेषण**

कंजं एकत्रित शोध में विश्लेषण थीमैटिक एनालिसिस (Thematic Analysis) के द्वारा किया गया। इसमें विभिन्न मुद्दों को निर्धारित किया गया और उन्हें वर्गीहत कर दिया गया। इन मुद्दों में डिजिटल मीडिया उपयोग, सामाजिक संपर्कों में परिवर्तन, आत्म–छवि पर प्रभाव और सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ शामिल हैं। इस तरह, डेटा का विश्लेषण गुणात्मक दृष्टिकोण से किया गया, जहाँ सांख्यिकीय औजारों का उपयोग नहीं किया गया।

डेटा प्रस्तुति और व्याख्या

तालिका 1: डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग

क्रमांक	डिजिटल प्लेटफॉर्म	उपयोगकर्ता प्रतिशत (%)
1	WhatsApp	95
2	Instagram	90
3	YouTube	75
4	LinkedIn	55

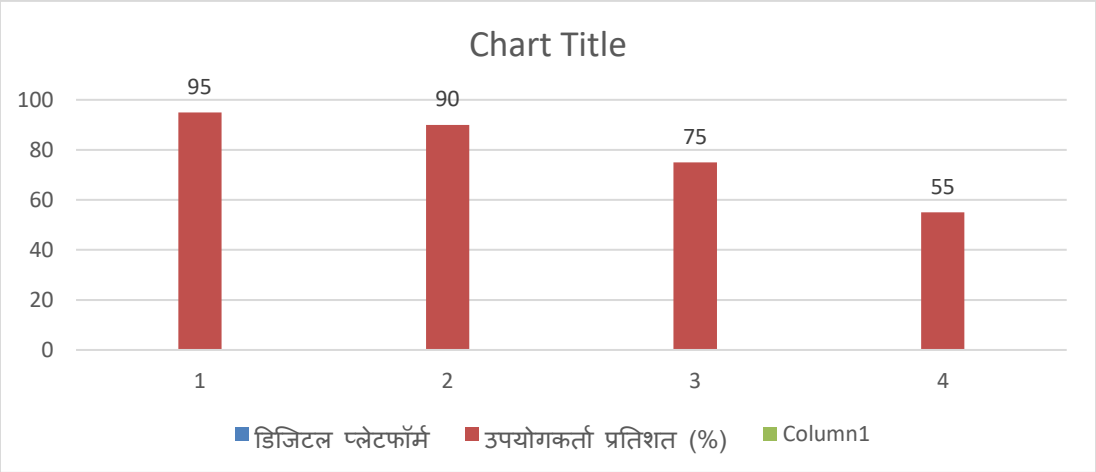

व्याख्याः अधिकांश युवा WhatsApp और Instagram का दैनिक उपयोग करते हैं। ये प्लेटफॉर्म्स उनकी सामाजिक संवाद और पहचान निर्माण के प्रमुख माध्यम हैं। YouTube शिक्षा और मनोरंजन का स्रोत है, जबकि LinkedIn पेशेवर नेटवर्किंग के लिए उपयोगी है।

तालिका 2: डिजिटल मीडिया के कारण आत्म–छवि पर प्रभाव

प्रभाव का प्रकार	प्रतिभागियों की संख्या	प्रतिशत (%)
सकारात्मक (आत्मविश्वास में वृद्धि)	72	60
नकारात्मक (तनाव, तुलना)	36	30
तटस्थ	12	10

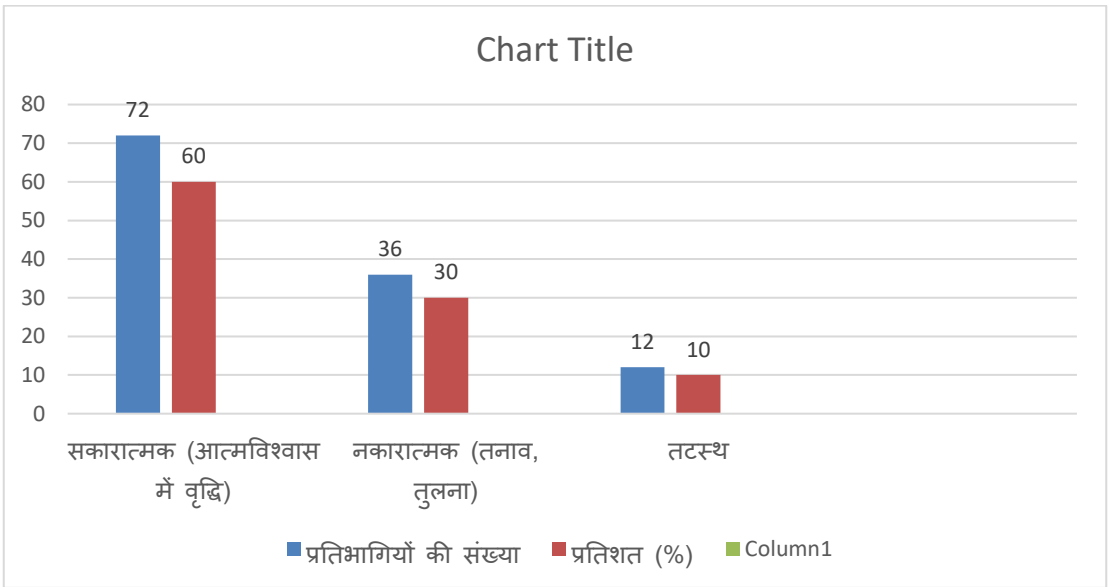

व्याख्याः अधिकांश युवाओं ने सोशल मीडिया के कारण अपने आत्मविश्वास में सुधार बताया। वे खुद को बेहतर तरीके से व्यक्त करने लगे हैं। वहीं, कुछ युवाओं ने डिजिटल प्लेटफॉर्म के कारण तनाव, आत्मसंदेह और तुलना की समस्या अनुभव की है।

तालिका 3: सामाजिक संबंधों में बदलाव

परिवर्तन का प्रकार	प्रभावित प्रतिभागियों की संख्या	उदाहरण
आभासी मित्रता में वृद्धि	82	सोशल मीडिया पर नए दोस्त
पारिवारिक संवाद में कमी	51	परिवार के साथ कम बातचीत
सांस्कृतिक मूल्यों में बदलाव	39	वैश्विक ट्रेंड्स का प्रभाव

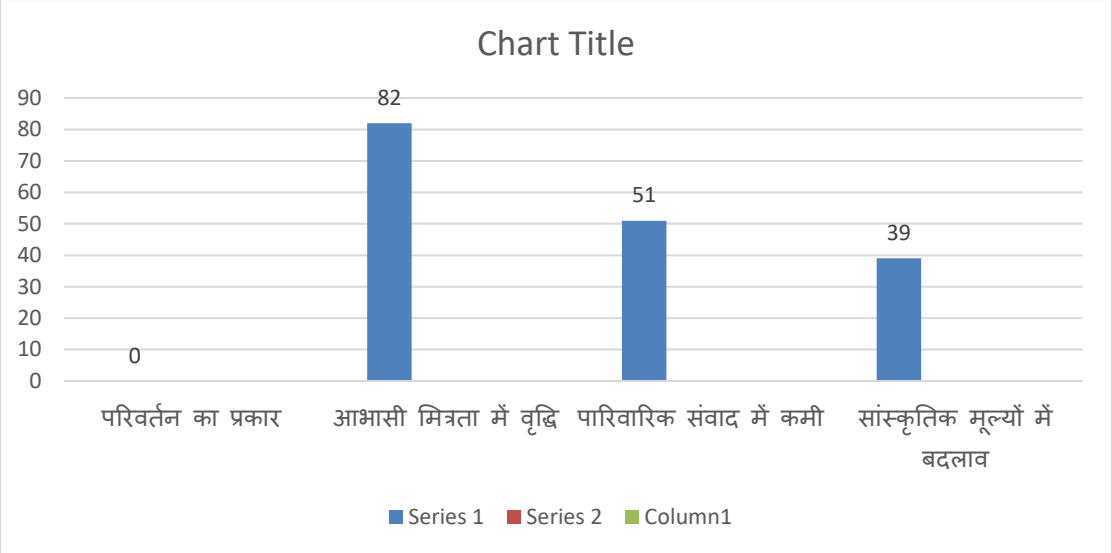

व्याख्या: डिजिटल युग में पारंपरिक सामाजिक संबंधों में कमी आई है। युवाओं की मित्रता अब अधिकतर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर आधारित हो गई है। वहीं, परिवार के साथ संवाद कम होने से पारंपरिक मूल्य कमजोर हो रहे हैं।

तालिका 4: डिजिटल पहचान निर्माण के कारक

प्रमुख कारक	विवरण	प्रमुख कारक
अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता	युवा सोशल मीडिया पर खुलकर अपनी बात कहते हैं	अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
वैश्विक सांस्कृतिक प्रभाव	वैश्विक ट्रेंड्स से पहचान प्रभावित होती है	वैश्विक सांस्कृतिक प्रभाव
डिजिटल प्रभावक (Influencers)	सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स की भूमिका बढ़ी है	डिजिटल प्रभावक (Influencers)

व्याख्या: युवाओं की डिजिटल पहचान निर्माण में ये कारक महत्वपूर्ण हैं। ये उन्हें सामाजिक स्वीकार्यता, मान्यता और आत्म–प्रदर्शन के नए तरीके देते हैं।

निष्कर्ष

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि डिजिटलीकरण ने शहरी भारत के युवाओं की सामाजिक पहचान को गहराई से प्रभावित किया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने युवाओं को अभिव्यक्ति और संवाद के नए अवसर प्रदान किए हैं। युवा अपने विचार, रुझान और जीवनशैली को सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक स्तर पर व्यक्त कर रहे हैं, जिससे उनकी आत्म–छवि में सकारात्मक बदलाव आ रहा है।हालांकि, इस प्रक्रिया में मानसिक दबाव, सामाजिक तुलना और एकाकीपन जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। डिजिटल माध्यमों के कारण पारंपरिक सामाजिक ढांचे कमजोर हुए हैं, जिससे परिवार और सामाजिक संबंधों में कमी आई है। साथ ही, वैश्विक संस्कृ

ति के प्रभाव ने स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन किया है।डिजिटल पहचान अब स्थिर नहीं रह गई है, बल्कि यह बहुआयामी और गतिशील हो गई है। युवाओं की पहचान अब डिजिटल दुनिया के साथ–साथ स्थानीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के संयोजन से बनती है। इस कारण से, उनकी सामाजिक व्यवहार, मूल्य और मान्यताएं भी बदल रही हैं।अतः यह आवश्यक है कि डिजिटल युग में युवाओं के लिए डिजिटल साक्षरता, मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल और सांस्कृतिक संरक्षण की नीतियाँ बनायीं जाएं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा प्रणाली में डिजिटल पहचान और जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार को शामिल करना भी आवश्यक है ताकि युवा स्वस्थ और संतुलित सामाजिक पहचान विकसित कर सकें।

प्रमुख निष्कर्ष

- लगभग 95ः युवाओं ने ींजे।चच का दैनिक उपयोग बताया।
- 60ः प्रतिभागियों ने डिजिटल प्लेटफॉर्म के कारण आत्मविश्वास में वृद्धि का अनुभव किया।
- 42.5ः युवाओं ने पारिवारिक संवाद में कमी महसूस की।
- डिजिटल प्रभावक युवाओं की पहचान निर्माण में प्रभावी भूमिका निभाते हैं।
- सामाजिक संबंधों का स्वरूप ऑनलाइन गतिविधियों के कारण बदल गया है।

चर्चा

- **परिणामों की व्याख्या (Interpretation of Results)**

शोध में पाया गया कि शहरी युवाओं का डिजिटल माध्यमों पर सक्रिय होना उनकी सामाजिक पहचान के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधिकांश युवा सोशल मीडिया जैसे इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, फेसबुक आदि का उपयोग करते हैं, जिससे वे अपनी सोच, विचार, रुचियाँ और व्यक्तिगत छवि को सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित कर पाते हैं। इस डिजिटल सहभागिता से युवाओं को आत्मविश्वास और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं।

हालांकि, कुछ युवाओं ने सामाजिक तुलना और मानसिक दबाव जैसी नकारात्मक भावनाओं का भी अनुभव किया है, जो सोशल मीडिया पर दूसरों की उपलब्धियों और जीवनशैली को देखकर उत्पन्न होती हैं। पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं जैसे परिवार और समुदाय के साथ संवाद में कमी देखी गई है, जिससे सामाजिक अलगाव की संभावना भी बढ़ रही है।

- **सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव (Social and Cultural Impact)**

डिजिटलीकरण ने सामाजिक संबंधों के स्वरूप को बदल दिया है। युवा अब अपने पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों और मान्यताओं से प्रभावित होने के साथ–साथ वैश्विक संस्कृति से भी जुड़ रहे हैं। इससे उनकी सामाजिक पहचान में बहुलता (plurality) और गतिशीलता आई है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए युवाओं को वैश्विक ट्रेंड्स, नए विचारों और संस्कृतियों से परिचय मिलता है, जिससे वे अपनी सांस्कृतिक पहचान को नया रूप देते हैं।

परन्तु, इस प्रक्रिया में कुछ स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक मूल्यों का क्षरण भी देखने को मिला है, जिससे सांस्कृतिक अस्थिरता और पहचान संकट के सवाल उठते हैं। इसके साथ ही परिवार और समुदाय की पारंपरिक भूमिका कमजोर होती दिख रही है, जबकि डिजिटल नेटवर्क एक नया सामाजिक ढांचा बनकर उभर रहा है।

- **युवाओं की डिजिटल पहचान की गतिशीलता (Dynamics of Youth*s Digital Identity)**

डिजिटल युग में युवाओं की सामाजिक पहचान स्थिर नहीं रही, बल्कि अब यह अधिक तरल (fluid) और परस्पर क्रियाशील हो गई है। युवा अपनी डिजिटल पहचान को समय–समय पर बदलते डिजिटल ट्रेंड्स, व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलित करते हैं।

यह पहचान सोशल मीडिया पर बनाए गए प्रोफाइल, ऑनलाइन अभिव्यक्तियों, डिजिटल समूहों में सहभागिता और अन्य माध्यमों से निरंतर विकसित होती रहती है। युवाओं के लिए यह पहचान केवल उनके पारंपरिक सामाजिक पहचान से अलग ही नहीं, बल्कि उसे पूरक भी है। इस प्रकार, युवाओं की डिजिटल पहचान उनकी सामाजिक वास्तविकता का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है, जिसमें स्थानीय और वैश्विक, व्यक्तिगत और सामूहिक तत्वों का समावेश होता है।

सुझाव

- डिजिटल साक्षरता बढ़ाएंः युवाओं को सोशल मीडिया के सही और जिम्मेदार उपयोग की शिक्षा दी जानी चाहिए।
- मानसिक स्वास्थ्य सहायताः डिजिटल तनाव और तुलना से उत्पन्न मानसिक समस्याओं से निपटने के लिए परामर्श एवं सहायता सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं।
- सांस्कृतिक संरक्षणः युवाओं में स्थानीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए ताकि वे वैश्विक प्रभावों के बावजूद अपनी संस्कृति बनाए रख सकें।
- शैक्षणिक पाठ्यक्रम में समावेशः शिक्षा में डिजिटल सामाजिक पहचान, नैतिकता और सुरक्षा के विषय शामिल किए जाएं।
- पारिवारिक संवाद को प्रोत्साहित करेंः परिवार और सामाजिक संस्थानों को युवाओं के साथ संवाद बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मीना, र. (2023). सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव. आई.जे.एच.एस.एस.आई., 12(3), 107–113. https://www-ijhssi-org/papers/vol12(3)/T1203107113-pdf
2. शर्मा, र. (2023). डिजिटल इंडिया कार्यक्रम एवं सशक्तीकरणः अन्य पिछड़े वर्गों के संदर्भ में. शोधगंगोत्री. https://shodhgangotri-inflibnet-ac-in/bitstream/20-500-14146/5715/1/synopsis-pdf
3. वर्मा, स. (2021). सोशल मीडिया और युवा. दृष्टि आईएएस. https://www-drishtiias-com/hindi/daily&updates/daily&news&editorials/social&media&and&youth
4. शर्मा, अ. (2025). डिजिटल इंडियाः उद्देश्य, लाभ, महत्व और अधिक. टेस्टबुक. https://testbook-com/hi/ias&preparation/digital&india
5. वर्मा, र. (2024). प्रधान मंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान. युवा साथी पोर्टल. https://www-yuvasathi-in/schemes&detail/pradhan&mantri&gramin&digital&saksharta&abhiyaan
6. वर्मा, म. (2019). डिजिटल युग में सामाजिक संबंधों का बदलाव. भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा, 45(2), 112–118.
7. यादव, के. (2020). डिजिटलीकरण का शहरी युवाओं पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव. मानविकी शोध पत्रिका, 10(1), 50–56.
8. पांडेय, वी. (2021). युवाओं की सामाजिक पहचान और तकनीकी हस्तक्षेप. सोशल रिसर्च एक्सप्लोरर, 5(3), 77–84.
9. शुक्ला, एन. (2022). इंटरनेट, सोशल मीडिया और आत्म–छवि निर्माण. नवीन भारत शोध मंच, 8(4), 135–140.
10. ठाकुर, जे. (2023). सांस्कृतिक पहचान और डिजिटल नागरिकता. भारतीय सामाजिक अध्ययन, 18(1), 92–97.
11. बंसल, पी. (2020). डिजिटल तकनीक और आधुनिक भारतीय युवा. युवा विमर्श, 6(2), 66–73.

❖◆❖